रुकें और देखें तो जीवन यात्रा की सीन अच्छी लगेगी...

मुझे याद आता है कि एक बार हम बम्बई गए थे। हमारा एक कार्यक्रम था। हमारा कार्यक्रम तीन से पांच बजे का था। शाम का समय जब हमारा फ्री था। तो एक परिवार वाले आकर हमें कहने लगे कि बहन जी, शाम के समय अगर फ्री हो तो हमारी कॉलोनी में बहुत अच्छे लोग रहते हैं। अगर आप एक घंटे का प्रवचन दो तो सबको लाभ मिल जायेगा। सारे लोग बहुत ही आध्यात्मिक विचार वाले लोग हैं। हमने कहा तो कहा शाम को सात से आठ बजे का टाईम दें सबको। फिर वो तो चले गए। हम भी यहां कार्यक्रम में गए तीन से पांच बजे तक। पांच बजे कार्यक्रम पूरा होने के बाद कुछ प्रश्न-उत्तर हुआ। कुछ लोगों से मिलना हुआ। तो उस समय साढ़े पांच हो गए। अब निकलने लगे तो, जो बहन हमारे साथ थी वो कहने लगी कि बहन जी अब अगर आश्रम जायेंगे और फिर उनके घर जायेंगे। फिर तो रास्ता भी लंबा है और ट्राफिक का समय शुरू हो गया है। उस समय में फ्लाई ओवर नहीं थे। अगर ट्राफिक जाम में फंस गए, तो सात बजे भी फिर पहुंच नहीं पायेंगे। तो हमने कहा कि फिर क्या करना चाहिए? तो कहा कि यहां से ही सीधा चलते हैं। हमने पूछा कि यहां से कितनी देर लगेगी। तो कहा बस दस मिनट का रास्ता है। हमने कहा कि फिर तो हम बड़ा जल्दी पहुंच जायेंगे। कहा कोई बात नहीं वो लोग बहुत अच्छे लोग हैं। अगर जल्दी भी पहुंच गए तो वो माइण्ड नहीं करेंगे। हमने कहा ठीक है चलो। चले तो छः बजे तो हम पहुंच गए। अब उन्होंने इतना जल्दी हमें एक्सपेक्ट नहीं किया था, कि एक घंटा पहले आयेंगे। जब हम पहुंचे तो सारा परिवार बैठकर टी वी देख रहा था। अब हमको जैसे ही देखा तो मात-पिता ने बच्चों को इशारा किया कि टी वी बंद करो। तो बच्चों ने ईशारा किया कि हम बंद करने वाले नहीं हैं। अब आजकल की दुनिया में तो बच्चों का ज्यादा सुनना पड़ता है। माँ-बाप ने कहा अच्छा आवाज को धीमा कर दो। बच्चों ने मान लिया आवाज को धीमा कर दिया। अब वहीं बैठना था वहीं उनकी टीवी चल रही थी। उनका आवाज कम कराया और यहां माँ-बाप हमसे बात करने लगे। कैसा रहा प्रोग्राम? क्या हुआ? आदि पूछने लगे। अब जरूर है कि बच्चों को डिस्टर्ब तो होगा। क्योंकि जो सीरियल चल रही थी, उसमें डिस्टर्ब हो रहा

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

था। हम लोग बात कर रहे थे, तो उनका जो सबसे छोटा वाला बेटा था, बारह पंद्रह साल के बीच का होगा। वह आकर मुझे कहने लगा दीदी प्लीज, डोंट माइण्ड लेकिन आप थोड़ा साइलेंस रहेंगे ना तो बहुत अच्छा रहेगा। बड़ी सभ्यता के साथ उसने मुझे कहा। मुझे भी हंसी आ गई। लेकिन फिर वो अपना जस्टीफिकेशन देने लगा कि ऐसा है कि ये सीरियल बहुत अच्छा है। हम उसको मिस करना नहीं चाहते। क्योंकि आज उसका लास्ट एपिसोड है। आज के ऐपिसोड में कई ससपेन्स खुलने वाले हैं। मैंने सोचा अच्छी बात है, देखें तो सही क्या ससपेंस होता है। जैसे ही मैंने देखा कि एक दृश्य का दूसरे दृश्य से कोई संबंध नहीं था। लेकिन पता नहीं उनका क्या ससपेन्स खुलता था। उसी में वो खुश हो जाते थे। बहुत खुश होकर के कहते थे वाह! बहुत अच्छा। क्या अच्छा दिखाया हमें समझ में नहीं आया। स्टोरी जैसा भी, कुछ नहीं लग रहा था। लेकिन पता नहीं क्या उनको अच्छा लगता था। बड़े खुश हो रहे थे। आखिर जब अंत हुई तो उसमें भी कोई खास बात नहीं थी, लेकिन फिर भी वो बहुत खुश हो गए कि बहुत अच्छा अंत दिखाया। तब मुझसे रहा नहीं गया और मैंने उस बच्चे को बुलाकर पूछा, इसमें क्या अच्छा था। एक दृश्य का दूसरे दृश्य से कोई कनेक्शन नहीं था। स्टोरी क्या थी वो भी पता नहीं चल रही थी। तो अच्छा क्या लगा? वो बच्चा मुझे कहने लगा कि दीदी ऐसा है आपने सारे ऐपिसोड देखे नहीं ना! इसलिए आपको कुछ समझ में नहीं आया। लेकिन हमने तो सारे ऐपिसोड देखे है ना इसलिए हमें कनेक्शन समझ में आ रहा था कि इस घटना का कनेक्शन कौन से ऐपिसोड के साथ है और हमको अच्छा लग रहा था। वो तो इतना बोलकर चला गया। लेकिन इतनी बड़ी बात मुझे समझा कर गया कि इस संसार चक्र में हमारे कितने जन्म हैं। और एक-एक जन्म एक-एक ऐपिसोड की तरह है। अब कलियुग का अंतिम समय आया अर्थात् ये लास्ट ऐपिसोड है। अब लास्ट ऐपिसोड में स्टोरी जैसा तो कुछ होगा ही नहीं। एक दृश्य का, दूसरे दृश्य से कोई कनेक्शन नहीं है। उसमें क्या ससपेन्स खुलता होगा, वह भी पता नहीं चलता होगा। लेकिन जब कोई ससपेन्स खुलता भी होगा तो हम इतने दुःखी हो जाते हैं कि ऐसा क्यों हुआ? हमने किसी का बुरा किया नहीं फिर ऐसा क्यों हुआ? लेकिन इस दृश्य का कनेक्शन कोई-न-कोई एपिसोड के साथ होगा कि नहीं होगा। अगर हमें भी टोटल सारे एपिसोड याद होते थे, तो हम भी क्या कहते, वाह बहुत अच्छा हुआ। ये जो हुआ बहुत अच्छा हुआ।

सात्विकता को ....

न्यूयार्क से आई ब्र.कु. मोहिनी बहन ने कहा कि जीवन व समय के महत्व को समझ कर हर सेकण्ड को सफल करने वाला ही महान बनता है। उन्होने सच्चे मन से कमजोरियों को स्वाहा करने पर बल दिया।

लंदन से आई जयंति बहन ने कहा कि शिव की जयंति के साथ शिव को पहचान उनकी श्रीमत पर चलने वाली आत्माओं की भी जयंति है। शिव के अवतरण के साथ ही ज्ञान के आधार से आत्माओं को नव जीवन मिला। ब्र.कु. मुन्नी, ब्र.कु.शशि, ब्र.कु.शीलू ने भी विचार व्यक्त किए।

मुस्कान ....

सभी आकर्षित हैं, उसके पास सभी क्षणभर ठहरना चाहते हैं। क्या आपने इसका कारण ढूंढा? नहीं ढूंढा तो ढूंढकर देखिए। आपको उनकी अनेक विशेषताओं में सबसे प्रथम दृष्टिगोचर होगी, मुस्कान। मुस्कान मिलनसारिता की जननी है, संपर्कशील बनाने की अनिवार्य कड़ी है।

आशावादिता का रूप मुस्कान है। निराशावादी व्यक्ति मुस्कराना नहीं जानता। उनके चेहरे पर सदा गंभीरता और दुःख की छाप लगी रहती है। आज के संघर्षमय और दुःखी वातावरण में आपके दुःख से और अधिक दुःख कौन चाहेगा? जो प्रसन्न रहते हैं और मुस्कान से अपने व्यक्तित्व को आकर्षक बनाए रखते हैं उनके चारों ओर सफलता चक्कर काटती है।

बापदादा तो कहते हैं - बच्चे, सफलता तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है। जीवन में यदि सफलता प्राप्त करनी है तो अवश्य ही मुस्कान लुटाना सीखें। जो हर क्षण मुस्करा सकता है, वह प्रत्येक परिस्थिति में अपने आपको व्यवस्थित भी कर सकता है। जिसने हंसना और मुस्कराना नहीं जाना, उसने जीना ही नहीं जाना। यह वर्ष तपस्या वर्ष चल रहा है, परंतु इस तपस्या के साथ-साथ मुस्कराहट को भी जोड़ दें। मुस्कराता हुआ चेहरा ब्राह्मण जीवन का सच्चा श्रृंगार है। इसलिए इस ब्राह्मण जीवन को जीने के लिए मुस्कराइये और जीवन के प्रत्येक मोड़ पर मुस्कराते हुए सफलता से आगे बढ़ते जाइए।

धर्म समाज को ....

गुरूद्वारे मस्जिद के चक्कर काटता है लेकिन क्षणिक शांति ही प्राप्त कर पाता है। परमात्मा से मिलन मनाने के लिए आत्मा को केवल निश्चय की आवश्यकता है। जीसस ने कभी नहीं कहा आई एक गॉड। उन्होने भी कहा गॉड इज लाइट। चर्च में भी जायेंगे तो वहां मोमबत्ती जलाते हैं। बड़ी मोमबत्ती परमात्मा व छोटी आत्माओं का प्रतीक हैं।

मो.अहमद काजमी ने कहा कि जो बातें ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा बताई जा रही हैं वह कुरान की आयतों में भी लिखा हुआ है। अल्लाह उन्हें ही अच्छा कहता है जो झगड़े या फसाद नहीं करते।

स्वामी देवानंद ने कहा कि आत्मा की सत्ता इस शरीर रूपी प्रकृति में है। आत्मा इस शरीर द्वारा कर्म करती है। कोई भी धर्म मनुष्य को संहार की शिक्षा नहीं देता। यदि हम धर्म के मर्म को समझ लें तो कभी दंगे फसाद नहीं होंगे। धर्म तो हमारा प्राण है जिससे समाज में नित आपसी सद्भाव बढ़ता है।

जैन समाज से आए नेमचंद जी ने कहा कि अहिंसा, ब्रह्मचर्य ऐसे सिद्धांत हैं जिन्हें अपनाने से मनुष्य का जीवन सफल बन सकता है।

डॉ.एस.आर.वर्मा ने कहा कि मनुष्य को जीवन में श्रेष्ठ चिंतन करने की आवश्यकता है।

बैजनाथ। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुलक्षणा एवं ब्र.कु. हरनाम तथा अन्य

पेठ वडगॉव। पत्रकार दिवस के अवसर पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम के बाद पी.एस. आय अनिल विभूते, वरिष्ठ पत्रकार अजित पाटिल, ब्र.कु. शोभा, ब्र.कु. रानी तथा अन्य समूह चित्र में।

बोपोडी-पुणे। दैनिक लोकमत पुणे के विकास संपादक अनंत दीक्षित व उपसंपादक पराग पोतदार को सौगात देते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी।

आद्रा-पुरूलिया। सेरो मेला अजय कुमार वर्मा (जी.एम. साउथ ईस्टर्न रेलवे) को संदेश देते हुए ब्र.कु. संध्या एवं अरविन्द मिथवा।

रायगढ़-छत्तीसगढ़। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए सी.एस.पी बहन नेहा पाण्डे साथ में ब्र.कु. चित्रा एवं ब्र.कु. पार्वती ।

राबर्ट्सगंज। सांसद पकौड़ी लाल कोल व विधायक अविनाश कुशवाहा जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुमन।